Date
08/05/20

B.Ed-IInd

Sub- Work Education, Gandhiji's Nai Talim & Community Engagement.

मानववाद और शिक्षक → मानववाद का उद्देश्य बालकों में मानवीय दृष्टिकोण का विकास करना है। इसका विकास करने में शिक्षक का योगदान सर्वाधिक होता है। मानववादी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मानववादी शिक्षक शिक्षक में निम्न गुण होने चाहिए—

I. शिक्षक का दृष्टिकोण उदार एवं व्यापक होना चाहिए।

II. शिक्षक को मानवीय गुणों से युक्त होना चाहिए।

III. शिक्षक को बालक को प्राथमिकता देनी चाहिए और उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

IV. बालक को ऐसे अनुभव करना चाहिए जिनमें वह पूर्णतः सुखी और स्वतन्त्र अनुभव करे।

V. शिक्षक को बालक की चिन्तन शक्ति, तर्क शक्ति, निर्णय शक्ति और कल्पना शक्ति का विकास करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

VI. शिक्षक को अध्यापन के समय मनोवैज्ञानिक विधियों को अपनाना चाहिए।

VII. शिक्षक को बालकों को तनाव, द्वन्द्व, हीनता की भावना और कुण्ठाओं से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न करना चाहिए।

VIII. शिक्षक को भाषण, विचार गोष्ठियाँ, वाद-विवाद, गोष्ठी, कार्यशाला, सम्मेलन तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिषद की स्थापना।

IX. शिक्षक को परिवर्तन और पुनर्रचना में विश्वास रखना चाहिए।

X. शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के साथ मानवीय सम्बन्ध रखने चाहिए न कि व्यवसायिक।

Scanned with CamScanner

Unit – 5

नई तालीम और क्षेत्रीय सहभागिता

ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना -

विद्यालय के द्वारा किए जाने वाले सामुदायिक कार्य ⇒ वर्तमान परिदृश्य में शिक्षक, अधिक संख्या में ग्रामीण स्कूलों में काम करते हैं उन ग्रामीण समुदायों को संभालने के लिए तैयार करने की जरूरत है जो अपने बच्चों को इनके स्कूलों में भेजते हैं छात्र समुदाय के लोगों के साथ शारीरिक / भौतिक कार्यों में जुड़ने के लिए स्वयं को सक्षम बना सके और पाठ्यक्रम के उस भाग को पूरा कर सकें, जो शारीरिक कार्य, क्षेत्रीय व्यस्तता तथा अनुभवजन्य शिक्षा से सम्बन्धित है। अध्यापकों को भी स्थानीय समुदाय के साथ गहन भागीदारी की आवश्यकता है। क्षेत्रीय सहभागिता के लिए सामुदायिक भागीदारी निम्न आधार पर की जा सकती है:-

1. सम्मान और सौहार्दपूर्ण भाषा के उपयोग की जानकारी।
2. पानी का सदुपयोग, पानी की बचत, आवश्यकतानुरूप ही सभी संसाधनों का उपयोग।
3. छात्रों द्वारा व्यक्तिगत स्वच्छता का प्रदर्शन, अर्थात पानी, हाथ धोने और कूड़ेदान आदि का प्रयोग करना।
4. पोषण और कुपोषण और इसके कारणों का अध्ययन।
5. पुस्तकालयों, दस्तावेजीकरण केन्द्रों और रीडिंग रूम को व्यवस्थित करना।